श्रीहनुमत्प्रोक्त मन्त्रराजात्मक रामस्तव

तिरश्चामपि चारातिसमवाय समेयुषाम्। यत सुग्रीवमुख्याना यस्तमुग्रं नमाम्यहम्॥
सकृदेव प्रपन्नाय विशिष्टामैरयच्छ्रियम्। विभीषणायाब्धितटे यस्त वीर नमाम्यहम्॥
यो महान् पूजितो व्यापी महान् वै करुणामृतम्। स्तुत येन जटायोश्च महाविष्णु नमाम्यहम्॥
तेजसाप्यायिता यस्य ज्वलन्ति ज्वलनादय। प्रकाशते स्वतन्त्रो यस्त ज्वलन्त नमाम्यहम्॥
सर्वतोमुखता येन लीलया दर्शिता रणे। रक्षसां खरमुख्याना तं वन्दे सर्वतोमुखम्॥
नृभाव य प्रपन्नाना हिनस्ति च तथा नृषु। सिह सत्त्वेष्विवोत्कृष्टस्त नृसिह नमाम्यहम्॥
यस्माद्बिभ्यति वातार्कज्वलनेन्द्रा समृत्यव। भिय तनोति पापाना भीषण त नमाम्यहम्॥
परस्य योग्यतापेक्षारहितो नित्यमङ्गलम्। ददात्येव निजौदार्याद् यस्त भद्र नमाम्यहम्॥
यो मृत्यु निजदासाना नाशयत्यखिलेष्टद। तत्रोदाहतये व्याधा मृत्युमृत्यु नमाम्यहम्॥
यत्पादपद्मप्रणतो भवत्युत्तमपूरुष। तमज सर्वदेवाना नमनीय नमाम्यहम्॥
अहंभाव समुत्सृज्य दास्येनैव रघूत्तमम्। भजेऽहं प्रत्यह राम ससीतं सहलक्ष्मणम्॥
नित्यं श्रीरामभक्तस्य किंकरा यमकिंकरा। शिवमय्यो दिशस्तस्य सिद्धयस्तस्य दासिका॥
इम हनूमता प्रोक्तं मन्त्रराजात्मक स्तवम्। पठत्यनुदिन यस्तु स रामे भक्तिमान् भवेत्॥

अपने मुख्य शत्रु रावणके विनाशके लिये जिन्होंने कपिराज सुग्रीवादि तिर्यक्-योनिमें उत्पन्न वानर-भालुओंकी सेना संगठित की (और सैन्य शिक्षाके द्वारा उन्हें सुप्रबुद्ध कर लकापर विजय प्राप्त कर ली) उन अति उग्र भगवान् रामको मैं नमस्कार करता हूँ। समुद्र-तटपर आये विभीषणको केवल एक बार 'मैं आपकी शरण हूँ'—ऐसा कहनेपर जिन्होंने लका आदिके राज्यसहित अपार वैभवको प्रदान किया उन महावीर श्रीरामको मैं प्रणाम करता हूँ। जो सर्वव्यापक हैं सबसे महान् हैं और देवता ऋषि-मुनियोंसे भी पूजित हैं तथा महान् कृपा-सुधाके मूर्तिमान् स्वरूप हैं और उस कृपा-सुधासे जटायुतकको भी जिन्होंने ससिक्तकर मुक्त कर दिया उन महाविष्णुस्वरूप भगवान् रामको मैं प्रणाम करता हूँ। अग्नि चन्द्रमा और सूर्य आदि तेजस्वी ज्योतिष्पुञ्ज जिनके तेजसे ही प्रकाशित एवं प्रज्वलित होते हैं और जो स्वय अपने तेजसे प्रकाशित होते हैं उन प्रज्वलित तेजोमय भगवान् रामको मैं प्रणाम करता हूँ। रणस्थलमें खर-दूषण त्रिशिरा आदि राक्षसोंसे युद्ध करते समय जिन्होंने अपनी लीलासे अपना मुखमण्डल सभी ओर दिखलाया (और सबका नाश कर दिया) उन सर्वतोमुख भगवान् रामकी मैं वन्दना करता हूँ। शरणमें आते ही जो मनुष्योंके सामान्य मोहमय मनुष्यभावको नष्टकर उन्हें लोकोत्तर ज्ञान एव विशिष्ट दिव्य शक्तियोंसे सम्पन्न कर देते हैं और जो सम्पूर्ण विश्वमें सिहके समान बली हैं उन नरसिह भगवान् रामको मैं नमन करता हूँ। जिनसे अग्नि वायु, सूर्य, इन्द्र यम आदि सभी भयभीत रहते हैं और पाप तो उनके भयसे सदा ही दूर भागता है उन भीषण रामको मैं नमस्कार करता हूँ। जो अपने भक्तोंकी किसी योग्यता आदिकी अपेक्षा किये बिना ही अपने उदार-स्वभावके कारण सदा सब कुछ देते ही रहते हैं और जो नित्य मङ्गलस्वरूप हैं उन परम भद्र स्वरूप सौजन्यमूर्ति भगवान् रामको मैं प्रणाम करता हूँ। जो अपने भक्तोंके मृत्युका समूलोच्छेदन कर उसकी सारी अभिलाषा पूर्ण कर देते हैं, इस सम्बन्धमें महर्षि वाल्मीकि जो पहले कभी व्याधका काम कर रहे थे परम प्रमाण हैं ऐसे मृत्युके भी मृत्यु भक्तवत्सल भगवान्को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनके चरण कमलोंमें प्रणाम करते ही अधम पुरुष भी अति उत्तम पुरुष बन जाता है उन जन्मादि षड्-विकारोंसे मुक्त सभी देवताओंके द्वारा वन्दनीय भगवान् रामकी मैं वन्दना करता हूँ। मैं (हनुमान्) ब्रह्मैकात्म्य-भावका परित्याग कर दास्यभाव अर्थात् सेव्य-सेवककी भावनासे अहर्निश लक्ष्मणसहित श्रीसीतारामकी उपासना करता हूँ। भगवान् श्रीरामके भक्तोंके लिये यमदूत भी सदाके लिये किंकर (सेवक—दास) बन जाते हैं उसके लिये दसों दिशाएँ मङ्गलमयी हो जाती हैं और सभी सिद्धियाँ उसके चरणोंमें लोटती हैं। हनुमान्जीद्वारा प्रोक्त इस मन्त्रराजात्मक स्तोत्रका जो पाठ करता है वह भगवान् श्रीरामका भक्त हो जाता है।

श्रीरामनाम-महिमा

भगवान् शंकर देवी पार्वतीसे कहते हैं—

रामेति द्व्यक्षरजपः सर्वपापापनोदकः। गच्छंस्तिष्ठञ्शयानो वा मनुजो रामकीर्तनात् ॥
इह निर्वर्तितो याति चान्ते हरिगणो भवेत्। रामेति द्व्यक्षरो मन्त्रो मन्त्रकोटिशताधिकः ॥
न रामादधिकं किंचित् पठनं जगतीतले। रामनामाश्रया ये वै न तेषां यमयातना ॥
रमते सर्वभूतेषु स्थावरेषु चरेषु च। अन्तरात्मस्वरूपेण यच्च रामेति कथ्यते ॥
रामेति मन्त्रराजोऽयं भवव्याधिनिषूदकः। राम रामेति रामेति रामेति समुदाहृतः ॥
द्व्यक्षरो मन्त्रराजोऽयं सर्वकार्यकरो भुवि। देवा अपि प्रगायन्ति रामनाम गुणाकरम् ॥
तस्मात्त्वमपि देवेशि रामनाम सदा वद। रामनाम जपेद्यो वै मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥

(स्कन्दपुराण, नागरखण्ड)

'राम—इस दो अक्षरोंके मन्त्रका जप समस्त पापोंका नाश करता है। चलते, बैठते, सोते, (जब कभी भी) जो मनुष्य रामनामका कीर्तन करता है, वह यहाँ कृतकार्य होकर जाता है और अन्तमें भगवान् हरिका पार्षद बनता है। राम—यह दो अक्षरोंका मन्त्र शतकोटि मन्त्रोंसे भी अधिक (प्रभावशाली) है। रामनामसे बढ़कर जगत्में जप करनेयोग्य कुछ भी नहीं है। जिन्होंने रामनामका आश्रय लिया है, उनको यमयातना नहीं भोगनी पड़ती। जो 'राम'—इस नामसे पुकारा जाता है, वह अन्तरात्मस्वरूपसे स्थावर-जङ्गम सभी भूत-प्राणियोंमें रमण करता है। 'राम' यह मन्त्रराज भव-रोगका विनाशक है। 'राम' 'राम' 'राम' 'राम'—इस प्रकार उच्चारण करनेपर यह अक्षर (अविनाशी) मन्त्रराज पृथ्वीमें समस्त कार्योंको सफल करता है। गुणोंकी खानि इस रामनामका देवतागण भी भलीभाँति गान करते हैं। अतएव हे देवेश्वरि! तुम भी सदा रामनाम कहा करो। जो रामनामका जप करता है, वह सारे पापोंसे (मोहजनित समस्त सूक्ष्म और स्थूल पापोंसे) छूट जाता है।'

श्रीरामनामकी महिमा तथा श्रीरामके अष्टोत्तरशत नामका माहात्म्य

पार्वतीजीने कहा—नाथ ! आपने उत्तम वैष्णवधर्मका भलीभाँति वर्णन किया । वास्तवमें परमात्मा श्रीविष्णुका स्वरूप गोपनीयसे भी अत्यन्त गोपनीय है । सर्वदेववन्दित महेश्वर ! मैं आपके प्रसादसे धन्य और कृतकृत्य हो गयी । अब मैं भी सनातन देव श्रीहरिका पूजन करूँगी ।

महादेवजी बोले—देवि ! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा । तुम सम्पूर्ण इन्द्रियोंके स्वामी भगवान् लक्ष्मीपतिका पूजन अवश्य करो । भद्रे ! मैं तुम-जैसी वैष्णवी पत्नीको पाकर अपनेको कृतकृत्य मानता हूँ ।

वसिष्ठजी कहते हैं—तदनन्तर वामदेवजीके उपदेशानुसार पार्वतीजी प्रतिदिन 'श्रीविष्णुसहस्रनाम'का पाठ करनेके पश्चात् भोजन करने लगीं । एक दिन परम मनोहर कैलासशिखरपर भगवान् श्रीविष्णुकी आराधना करके भगवान् शंकरने पार्वतीदेवीको अपने साथ भोजन करनेके लिये बुलाया । तब पार्वतीदेवीने कहा—'प्रभो ! मैं श्रीविष्णुसहस्रनामका पाठ करनेके पश्चात् भोजन करूँगी, तबतक आप भोजन कर लें ।' यह सुनकर महादेवजीने हँसते हुए कहा—"पार्वती ! तुम धन्य हो, पुण्यात्मा हो; क्योंकि भगवान् विष्णुमें तुम्हारी भक्ति है । देवि ! भाग्यके विना श्रीविष्णु-भक्तिका प्राप्त होना बहुत कठिन है । सुमुखि ! मैं तो 'राम ! राम ! राम !'—इस प्रकार जप करते हुए परम मनोहर श्रीरामनाममें ही निरन्तर रमण किया करता हूँ । रामनाम सम्पूर्ण सहस्रनामके समान है । पार्वती ! रकारादि जितने नाम हैं, उन्हें सुनकर रामनामकी आशङ्कासे मेरा मन प्रसन्न हो जाता है । अतः महादेवि ! तुम रामनामका उच्चारण करके इस समय मेरे साथ भोजन करो ।"

यह सुनकर पार्वतीजीने रामनामका उच्चारण करके भगवान् शंकरके साथ बैठकर भोजन किया । इसके बाद उन्होंने प्रसन्नचित्त होकर पूछा—"देवेश्वर ! आपने रामनामको सम्पूर्ण सहस्रनामके तुल्य बताया है; यह सुनकर रामनाममें मेरी बड़ी भक्ति हो गयी है, अतः भगवान् श्रीरामके यदि और भी नाम हों तो मुझे बताइये ।'

महादेवजी बोले—पार्वती ! सुनो, मैं श्रीरामचन्द्रजीके नामोंका वर्णन करता हूँ । लौकिक और वैदिक जितने भी शब्द हैं, वे सब श्रीरामचन्द्रजीके ही नाम हैं; किंतु सहस्रनाम उन सबमें अधिक है और उन सहस्रनामोंमें भी श्रीरामके एक सौ आठ नामोंकी प्रधानता है । श्रीविष्णुका एक-एक नाम ही सब वेदोंसे अधिक माना गया है । वैसे ही एक हजार नामोंके समान अकेला श्रीरामनाम माना गया है । पार्वती ! जो सम्पूर्ण मन्त्रों और समस्त वेदोंका पाठ करता है, उसकी अपेक्षा कोटिगुना पुण्य केवल रामनामसे उपलब्ध होता है ।* शुभे ! अब श्रीरामके उन मुख्य नामोंका वर्णन सुनो, जिनका महर्षियोंने गान किया है—

ॐ श्रीरामो रामचन्द्रश्च रामभद्रश्च शाश्वतः ।
राजीवलोचनः श्रीमान् राजेन्द्रो रघुपुंगवः ॥
जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः ।
विश्वामित्रप्रियो दान्तः शरण्यत्राणतत्परः ॥
वालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक् सत्यविक्रमः ।
सत्यव्रतो व्रतफलः सदा हनुमदाश्रयः ॥
कौसलेयः खरध्वंसी विराधवधपण्डितः ।
विभीषणपरित्राता दशग्रीवशिरोहरः ॥
सप्ततालप्रभेत्ता च हरकोदण्डखण्डनः ।
जामदग्न्यमहादर्पदलनस्ताटकान्तकृत् ॥
वेदान्तपारो वेदात्मा भवबन्धैकभेषजः ।
दूषणत्रिशिरोऽरिश्च त्रिमूर्तिस्त्रिगुणस्त्रयी ॥
त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्तनः ।
त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यवासकृत् ॥
अहल्यापावनश्चैव पितृभक्तो वरप्रदः ।
जितेन्द्रियो जितक्रोधो जितलोभो जगद्गुरुः ॥
ऋक्षवानरसंघाती चित्रकूटसमाश्रयः ।
जयन्तत्राणवरदः सुमित्रापुत्रसेवितः ॥
सर्वदेवाधिदेवश्च मृतवानरजीवनः ।
मायामारीचहन्ता च महाभागो महाभुजः ॥
सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसत्तमः ।
महायोगी महोदारः सुग्रीवस्थिरराज्यदः ॥
सर्वपुण्याधिकफलः स्मृतसर्वाघनाशनः ।
आदिपुरुषो महापुरुषः परमः पुरुषस्तथा ॥

---

* विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम् ।
ताद‍ृङ्नामसहस्राणि रामनाम समं मतम् ॥
जपतः सर्वमन्त्रांश्च सर्ववेदांश्च पार्वति ।
तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते ॥

महान् योगी, ६५-महोदारः-परम उदार, ६६-सुग्रीवस्थिरराज्यदः-सुग्रीवको स्थिर राज्य प्रदान करनेवाले, ६७-सर्वपुण्याधिकफलः-समस्त पुण्योंसे अधिक फल देनेवाले, ६८-स्मृतसर्वाघनाशनः-स्मरण करनेमात्रसे ही सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाले, ६९-आदिपुरुषः-ब्रह्माजीको भी उत्पन्न करनेके कारण सबके आदिभूत अन्तर्यामी परमात्मा, ७०-महापुरुषः-समस्त पुरुषोंमें महान्, ७१-परमः पुरुषः-सर्वोत्कृष्ट पुरुष, ७२-पुण्योदयः-पुण्यका उदय होनेपर प्राप्त होनेवाले, ७३-महासारः-महाबली, ७४-पुराणपुरुषोत्तमः-पुराणप्रसिद्ध क्षर-अक्षर पुरुषोंसे श्रेष्ठ लीलापुरुषोत्तम, ७५-स्मितवक्त्रः-जिनके मुखपर सदा मुसकानकी छटा छायी रहती है, ऐसे, ७६-मितभाषी-नपी-तुली बात कहनेवाले, ७७-पूर्वभाषी-पूर्ववक्ता, ७८-राघवः-रघुकुलमें अवतीर्ण, ७९-अनन्तगुणगम्भीरः-अनन्त कल्याणमय गुणोंसे युक्त एवं गम्भीर, ८०-धीरोदात्तगुणोत्तरः-धीरोदात्त नायकके लोकोत्तर गुणोंसे युक्त, ८१-मायामानुषचारित्रः-अपनी मायाका आश्रय लेकर मनुष्योंकी-सी लीलाएँ करनेवाले, ८२-महादेवाभिपूजितः-भगवान् शंकरके द्वारा निरन्तर पूजित, ८३-सेतुकृत्-समुद्रपर पुल बाँधनेवाले, ८४-जितवारीशः-समुद्रको जीतनेवाले, ८५-सर्वतीर्थमयः-सर्वतीर्थस्वरूप, ८६-हरिः-पाप-तापको हरनेवाले, ८७-श्यामाङ्गः-श्याम-विग्रहवाले, ८८-सुन्दरः-परम मनोहर, ८९-शूरः-अनुपम शौर्यसे सम्पन्न वीर, ९०-पीतवासाः-पीताम्बरधारी, ९१-धनुर्धरः-धनुष धारण करनेवाले, ९२-सर्वयज्ञाधिपः-सम्पूर्ण यज्ञोंके स्वामी, ९३-यज्ञः-यज्ञस्वरूप, ९४-जरामरणवर्जितः-बुढ़ापा और मृत्युसे रहित । ९५-शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता-'रामेश्वर' नामक ज्योतिर्लिङ्गकी स्थापना करनेवाले । ९६-सर्वाघगणवर्जितः-समस्त पाप-राशिसे रहित, ९७-परमात्मा-परम श्रेष्ठ, नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्तस्वभाव, ९८-परं ब्रह्म-सर्वोत्कृष्ट, सर्वव्यापी एवं सर्वाधिष्ठान परमेश्वर, ९९-सच्चिदानन्दविग्रहः-सत्, चित् और आनन्द ही जिनके स्वरूपका निर्देश करानेवाले हैं, ऐसे परमात्मा, अथवा सच्चिदानन्दमय दिव्यविग्रहवाले, १००-परं ज्योतिः-परम प्रकाशमय, परम ज्ञानमय, १०१-परं धाम-सर्वोत्कृष्ट तेज अथवा साकेतधामस्वरूप, १०२-पराकाशः-त्रिपाद्विभूतिमें स्थित परमव्योम नामक वैकुण्ठधामरूप, महाकाशस्वरूप ब्रह्म, १०३-परात्परः-पर—इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदिसे परे परमेश्वर, १०४-परेशः-सर्वोत्कृष्ट शासक, १०५-पारगः-सबको पार लगानेवाले अथवा मायामय जगत्‌की सीमासे बाहर रहनेवाले, १०६-पारः-सबसे परे विद्यमान, अथवा भव सागरसे पार जानेकी इच्छा रखनेवाले प्राणियोंके प्राप्तव्य परमात्मा, १०७-सर्वभूतात्मकः- सर्वभूतस्वरूप, १०८-शिवः-परम कल्याणमय—ये श्रीरामचन्द्रजीके एक सौ आठ नाम हैं । देवि ! ये नाम गोपनीयसे भी गोपनीय हैं, किंतु स्नेहवश मैंने इन्हें तुम्हारे सामने प्रकाशित किया है ।

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे ।
घोर भव-नीर-निधि नाम निज नाव रे ॥ १ ॥
एक ही साधन सब रिद्धि-सिद्धि साधि रे ।
ग्रसे कलि रोग जोग संजम समाधि रे ॥ २ ॥
भलो जो है, पोच जो है, दाहिनो जो, बाम रे ।
राम-नाम ही सों अंत सब ही को काम रे ॥ ३ ॥
जग नभ-बाटिका रही है फलि-फूलि रे ।
धुआँ-कैसे धौरहर देखि तू न भूलि रे ॥ ४ ॥
राम-नाम छाड़ि जो भरोसो करै और रे ।
तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौर रे ॥ ५ ॥

(विनयपत्रिका ६६)